विकसित भारत का संकल्प हो रहा साकार

दिलीप झा

प्रेस इन्फोर्मेशन ब्यूरो भोपाल की ओर से 20 फरवरी से 26 तक पत्रकारों का एक प्रतिनिधिमंडल ओडिशा टूर पर भेजा गया. राजा भोज एयरपोर्ट पर भोपाल पीआईबी के निदेशक मनीष गौतम ने पत्रकारों के इस दल को शुभकामना के साथ रवाना किया. सबसे खास बात यह थी कि इस दल के साथ पीआईबी के परितोष दीक्षित और रमेश चंद्र सामल को मीडिया कंडक्टिंग ऑफिसर के रूप में भेजा गया जिन्होंने बेहतरीन तरीके से अपनी भूमिका निभाई. मीडिया कर्मियों का यह दल 20 की रात्रि को भुवनेश्वर पहुंचा. इस दल में नवभारत भोपाल के संपादक दिलीप झा भी सम्मिलित थे.

इस टूर का मुख्य उद्देश्य ओडिशा में भारतीय जनता पार्टी की सरकार के कामकाज का अवलोकन करना था कि कैसे डबल इंजन वाली सरकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प को साकार कर रही है. स्वच्छ भारत के सपने को धरातल पर उतार कर पुरुस्कार जीतने में सफल भुवनेश्वर देश के अन्य राज्यों के लिए एक सीख है. यह कहने में कोई संकोच नहीं कि ओडिशा की चमचमाती हुई सड़कों पर साफ सफाई को देखकर एक सुखद अनुभूति होती है. सड़कों पर ट्रैफिक पुलिस यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाने में मुस्तैद थी. सुकून का

अद्भुत नजारा. कहीं कोई ट्रैफिक जाम.

तीसरे दिन पत्रकारों का प्रतिनिधि मंडल एशिया महादेश का पहला और विश्व का दूसरा सबसे बड़ा चिल्का झील देखने पहुंचा. यह खारे पानी के झील के रूप में मशहूर है. पूरी के पास समुद्र के पानी से निर्मित चिल्का झील का विहंगम दृश्य पर्यटकों को अपनी ओर जबरदस्त रूप से आकर्षित करता है. यहां नित्य लाखों पर्यटक झील देखने आते हैं और यहां घंटों नौका विहार का लुत्फ उठाते हैं. इसी रास्ते में हरिहर मंदिर पड़ता है. कहा जाता है कि भगवान जगन्नाथ जब 15 दिन के लिए बीमार पड़ते हैं तो इसी मंदिर में आकर विश्राम करते हैं और इस दौरान श्रद्धालुओं को यहीं दर्शन देते हैं.

सम्राट अशोक ने कलिंग के राजा को परास्त किया था

इसके बाद पत्रकारों के दल ने भुवनेश्वर स्थित खूनी नदी जो दया नदी के नाम से मशहूर है का भ्रमण किया. कहा जाता है कि राजा बिंदुसार के बेटे सम्राट अशोक ने यही पर कलिंग के राजा को परास्त कर युद्ध जीता था. इस युद्ध में लाखों लोग मारे गए थे. खून की नदियां बह गई थी. इतने लोगों के मारे जाने के बाद सम्राट अशोक का मन करुणा से द्रवित हो उठा था और उन्होंने युद्ध न करने का प्रण लिया था. यह भी कहा जाता है कि इस युद्ध के बाद से ही सम्राट अशोक ने बोद्ध धर्म को अपना लिया और बोद्ध भिक्षु के रूप में जीवन यापन करने लगे और पूरे देश में घूमकर लोगों को अहिंसा और शांति का उपदेश दिया?

पर्यटन का केंद्र लिंगराज मंदिर

ओडिशा के भुवनेश्वर में लिंगराज मंदिर पर्यटन का बड़ा केंद्र है. मध्यप्रदेश के पत्रकारों के दल को पीआईबी ने यहां भी दर्शन करवाया. इस ऐतिहासिक मंदिर की विशेषता यह है कि इस, परिसर में दर्जनों प्राचीन मंदिर हैं जो श्रद्धालुओं के लिए आस्था का केंद्र बना हुआ है. प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु यहां इन मंदिरों के दर्शन के लिए पहुंचते हैं. श्रद्धालुओं का कहना है कि सनातन धर्म और संस्कृति का यह मंदिर सबसे बड़ा केंद्र है. यहां आने पर उन्हें सुकून मिलता है.

पत्रकारों को कटक में आजादी के महान नायक नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म स्थान ले जाया गया. आज यह स्थान हमेशा पर्यटकों से गुलजार रहता है. देश के कोने-कोने से पर्यटक नेताजी सुभाष चंद्र बोस के बचपन से जुड़ी कहानियां को सुनने के लिए आते हैं. स्वतंत्रता संग्राम के महान नायक नेताजी के बाल्यावस्था की जानकारी को लेकर भारत के लोगों में उत्सुकता रहती है क्योंकि उनके निधन को लेकर आज भी रहस्य बना हुआ है.

आध्यात्मिक और सांस्कृतिक धरोहर भगवान जगन्नाथ धाम

दूसरे दिन पत्रकारों का दल ओडिशा के पुरी में स्थित विश्व प्रसिद्ध भगवान जगन्नाथ धाम मंदिर पहुंचा. यह भारत के चार धामों में से एक है. भारत में आध्यात्मिक और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में प्रसिद्ध जगन्नाथ धाम के चारों द्वार पर सतयुग, त्रेतायुग,द्वापर और कलियुग की गाथा है. अपार भक्ति और आस्था का संगम भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और बहन सुभद्रा के दर्शन के लिए प्रतिदिन करोड़ों श्रद्धालुओं का आगमन होता है. लेकिन इसके बावजूद भक्त सुचारू व्यवस्था में बाबा जगन्नाथ का दर्शन करते हैं. निश्चित रूप से आस्था का ऐसा सैलाब देखकर श्रद्वालुओं का मन गदगद हो जाता है और हर किसी की इच्छा प्रबल हो जाती है कि उसे बार बार भगवान जगन्नाथ का आशीर्वाद लेने का सौभाग्य प्राप्त हो.

कोणार्क का सूर्य मंदिर आकर्षण का केंद्र

मध्यप्रदेश के पत्रकारों ने अपने उड़ीसा भ्रमण के पहले दिन विश्व धरोहर स्थल ऐतिहासिक कोणार्क सूर्य मंदिर के भ्रमण के साथ ही वहां केन्द्र सरकार द्वारा बनायी गयी विश्व स्तरीय पर्यटन आधारभूत सुविधाओं का अवलोकन किया. यहां इंडियनऑयल फाउंडेशन द्वारा पर्यटकों के लिये अर्का क्षेत्र में 5 डिस्प्ले गैलरी में कोणार्क के सूर्य मंदिर और ओडिशा के साथ ही भारत के कई अन्य सूर्य मंदिरों की सदियों पुरानी अभियांत्रिकी संकल्पना की जानकारी आकर्षित करती है. यहां कोणार्क के असली सूर्य मंदिर और उसका स्केल मॉडल, स्कल्पचर मॉडल के अलावा ओडिशा के आर्टिफैक्ट और हैंडीक्राफ्ट की जानकारी मिलने से पर्यटक बेहद आकर्षित हो रहे हैं. जानकारी के लिए बता दें कि जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान भारत मंडपम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस विश्व धरोहर विरासत स्मारक की प्रतिकृति के सामने अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति जो बाइडेन से हाथ मिलाया था. भारतीय रिज़र्व बैंक ने इस ऐतिहासिक मंदिर कोणार्क सूर्य मंदिर का चित्रण 10 रुपये के नये नोट पर किया है. यही वजह है कि देश के विभिन्न हिस्सों में नित्य लाखों पर्यटक इस ऐतिहासिक मंदिर का दर्शन के लिए आते हैं. सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस मंदिर के आस पास खाने पीने की सामग्री आसानी से उपलब्ध है.

युवाओं के सपने हो रहे साकार

पीआईबी ने चौथे दिन पत्रकारों को भुवनेश्वर में ओडिशा सरकार द्वारा संचालित विश्व कौशल केंद्र का दौरा करवाया. यहां ओडिशा के अलावा अन्य राज्यों के छात्र-छात्राओं के लिए एक वर्ष का प्रशिक्षण कोर्स करवाया जाता है. यहां 8 प्रकार के कोर्स करवाया जाता है. इस संस्थान के सीईओ पिनाकी पटनायक ने पत्रकारों के साथ शिष्टाचार भेंट में बताया कि चार और कोर्स पाइपलाइन में है. फिलहाल 114 कंपनियों में यहां के छात्र-छात्राओं का प्लेसमेंट होता है. सबसे खास बात इस संस्थान की यह है कि यहां से प्रशिक्षण लेने के बाद 90 प्रतिशत छात्र छात्राओं का प्लेसमेंट होता है. ओडिशा सरकार ने थाईलैंड के साथ समन्वय बनाकर इस कौशल विकास केंद्र को बेहतरीन तरीके से संचालित कर रही है. 21 से 30 वर्ष के युवाओं को यहां प्रशिक्षण दिया जाता है. विश्व कौशल केंद्र के परिसर में ही प्रशिक्षण ले रहे छात्र-छात्राओं के लिए रहने की व्यवस्था है. युवाओं को एक साल का प्रशिक्षण के दौरान खाने और रहने के लिए केवल 20 हजार रुपए अदा करना होता है. इस केंद्र के अधिकारियों ने मध्यप्रदेश सरकार को भी कौशल विकास केंद्र की योजनाओं को विकसित करने के लिए अपने अनुभव साझा किए हैं. युवाओं को कैसे रोजगार मिले, इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय जनता पार्टी शासित सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि आईटीआई पास या अन्य डिप्लोमा इंजीनियर्स युवाओं को प्रशिक्षण दें ताकि उन्हें काम मिल सके अथवा वे नया स्टार्टअप की शुरुआत कर अन्य युवाओं को भी रोजगार मुहैया करवाने में सक्षम हों. निश्चित रूप से युवाओं को रोजगार मुहैया कराने में ओडिशा का यह कौशल विकास केंद्र का प्रयास अन्य राज्यों के सरकार के लिए मील का पत्थर साबित होगा.

फाइल में नाम आए तो चमके किस्मत

श्याम यादव

ताउम्र इस बात का मुझे अफ़सोस रहेगा कि मेरे नाम को कभी भी किसी फाइल ने अपने पन्नों में जगह नहीं दी. जबकि मैं हमेशा से ही वही सब कुछ करता आया हूं, जो अपना नाम चमकाने के लिए वे लोग करते हैं, जिनका नाम फ़ाइलों में बिना दस्तक दिए आ जाता है. एक अपना नाम है, जो अजगर की तरह कुंडली मारकर बैठा है—न आगे सरकता है, न पीछे हटता है, बस वहीं पड़ा रहता है.

मैं कोई यूं ही रास्ते से उठा आदमी नहीं हूं. पढ़ा-लिखा हूं. कवि हूं, साहित्यकार हूं. एक-दो संस्थाओं का पदाधिकारी भी रहा हूं. भाषण दे लेता हूं, लोग सुन भी लेते हैं. मंच से उतरते समय दो-चार लोग हाथ मिलाकर कहते भी हैं—'बहुत अच्छा बोला.' अख़बारों में कभी-कभार छप भी जाता हूं. यानी मान-सम्मान, पद, प्रतिष्ठा—सब कुछ है. बस एक ही कमी है और वही सबसे भारी—आज तक किसी फ़ाइल में नाम नहीं आया.

यह कमी नई नहीं है. बचपन से पीछा कर रही है. स्कूल में मास्साब ने कभी नहीं कहा—'श्याम, तुमने अच्छा लिखा है.' कॉलेज में भी नाम सूची के बीच कहीं दबा रह गया. नौकरी की, ईमानदारी से की, समय पर पहुंचा, समय पर लौटा, लेकिन फाइल तो दूर, बॉस की ज़ुबान पर भी नाम नहीं चढ़ा. तब धीरे-

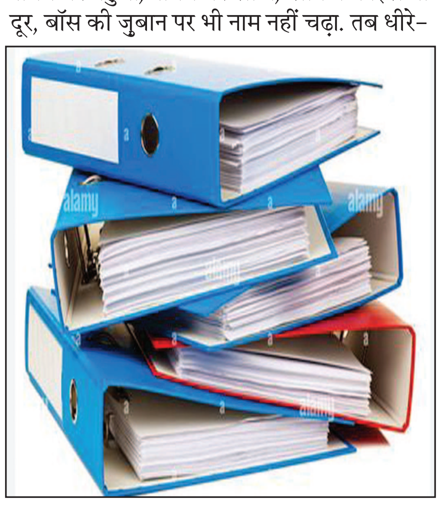

धीरे समझ में आने लगा कि कुछ नाम मेहनत से नहीं, माहौल से चमकते हैं.

इन दिनों तरह-तरह की फ़ाइलों की चर्चा रहती है. कुछ फ़ाइलें ऐसी भी होती हैं जिनमें नाम आने या न आने पर देशभर में बहस छिड़ जाती है. टीवी स्टूडियो गर्म हो जाते हैं, अख़बारों के पन्ने भर जाते हैं. सच क्या है, यह जांच का विषय होता है. मेरी विडंबना यह है कि मेरा नाम तो किसी बहस लायक फ़ाइल तक में भी कभी पहुंचा ही नहीं. न समर्थन मिला, न विरोध—सीधी-सी अनदेखी.

कई रातें इसी उधेड़बुन में कट गईं कि आख़िर नाम चमकता कैसे है. धीरे-धीरे यह समझ आया कि काम करने से नाम नहीं आता, काम रुकवाने से आता है. मैंने कभी काम नहीं रुकवाया. बैठकें समय पर शुरू हों, निर्णय समय पर हों—मैं इसी अपराध में लगा रहा. शायद यही मेरी सबसे बड़ी भूल थी.

अब उम्र के इस मोड़ पर खड़ा होकर लगता है कि नाम चमकाने की भी एक उम्र होती है. वह उम्र निकल गई. मेरा नाम अब सम्मान की अलमारी में टंगा है—इस्त्री किया हुआ, साफ़-सुथरा, लेकिन कभी पहना नहीं गया.

फिर भी मन के किसी कोने में यह इच्छा अब भी ज़िंदा है कि किसी दिन, किसी फ़ाइल के आख़िरी पन्ने पर, हाशिये में ही सही, नाम आ जाए. ताकि कोई कह सके—हां, इस आदमी को सम्मान तो मिला था, फ़ाइल देर से ही सही, मिली तो थी.

दुनिया के रंग, होली के संग

डॉ. कमलाकर सिंह

भारत में फाल्गुन पूर्णिमा को मनाई जाने वाली होली केवल रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि नवजीवन, प्रकृति के पुनर्जागरण और सामाजिक समरसता का महापर्व है. होलिका दहन बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है, तो रंगों का उत्सव मनुष्य के भीतर और समाज के बीच जमी दूरी को मिटाने का अवसर देता है. जल और रंग—दोनों शुद्धि, उल्लास और नए आरंभ के संकेत हैं. यही कारण है कि होली का यह भाव केवल भारत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि विश्व के अनेक देशों में अलग-अलग रूपों में प्रकट हुआ है.

आज होली का वैश्विक स्वरूप केवल सांस्कृतिक समानताओं तक सीमित नहीं है. विश्व के अनेक देशों में बसे भारतीय समुदाय ने इस पर्व को अंतरराष्ट्रीय पहचान दी है. संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका और खाड़ी देशों में भारतीय प्रवासी बड़े उत्साह के साथ होली मनाते हैं. मंदिरों, सांस्कृतिक संस्थाओं और खुले मैदानों में रंगोत्सव आयोजित होते हैं. अनेक स्थानों पर स्थानीय नागरिक भी इसमें सम्मिलित होते हैं और यह पर्व बहुसांस्कृतिक सद्भाव का प्रतीक बन जाता है. न्यूयॉर्क, न्यू जर्सी और कैलिफ़ोर्निया जैसे अमेरिकी राज्यों में सामूहिक होली उत्सव हजारों लोगों को आकर्षित करते हैं. लंदन और लीसेस्टर में भारतीय समुदाय रंगों के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करता है. सिडनी और मेलबर्न के विश्वविद्यालय परिसरों में होली युवाओं का विशेष आकर्षण बन चुकी है. खाड़ी देशों में भी सीमित परिस्थितियों के बावजूद भारतीय समाज अपनी परंपरा को सहेजे हुए है. दक्षिण-पूर्व एशिया में अप्रैल के महीने में जल के माध्यम से नववर्ष मनाने की परंपरा है. थाईलैंड का सोंगक्रम, म्यांमार का थिंग्यान, लाओस का पाई माई और कंबोडिया का चौल छनम थमे इन सभी में पानी के छींटों के साथ पुराने वर्ष की नकारात्मकताओं को विदा कर नए वर्ष का स्वागत किया जाता है. बुद्ध प्रतिमाओं का स्नान, बुजुर्गों का सम्मान और सामूहिक आनंद इन पर्वों की विशेषता है. जल यहाँ केवल खेल नहीं, बल्कि शुद्धि और समृद्धि की कामना का माध्यम है.

विश्व के अन्य भागों में भी जल और रंग से जुड़े उत्सव मिलते हैं. स्पेन के बुनोल नगर में ला टोमाटिना के दौरान लोग एक-दूसरे पर टमाटर फेंकते हैं. इटली के ईवेरिया नगर में संतरों की लड़ाई में संतरे की वर्षा का दृश्य प्रस्तुत करता है. दक्षिण कोरिया का बोर्योंग मिट्टी महोत्सव मिट्टी के साथ उल्लास का अनोखा रूप है, जबकि स्पेन के हारो नगर में हारो वाइन महोत्सव में अंगूरी रस के साथ सामूहिक आनंद मनाया जाता है. इन सभी उत्सवों में सहभागिता, उत्साह और प्रतीकात्मक शुद्धि का भाव स्पष्ट दिखाई देता है. इन आयोजनों में केवल रंग खेलना ही उद्देश्य नहीं होता. भारतीय संगीत, लोकनृत्य, पारंपरिक व्यंजन और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ इस पर्व को जीवंत उत्सव में बदल देती हैं. कई देशों में होली को वसंत उत्सव या रंग पर्व के रूप में भी मान्यता मिलने लगी है. इससे भारतीय संस्कृति की सकारात्मक और उत्सवधर्मी छवि विश्व समुदाय के सामने आती है.

मध्यप्रदेश में होली की छटा विशेष उल्लेखनीय है. मालवा अंचल में रंगपंचमी तक रंगों की गूंज बनी रहती है. इंदौर, उज्जैन में रंगपंचमी का सार्वजनिक उत्साह देखने योग्य होता है. बघेलखंड और बुंदेलखंड में फाग गीतों की परंपरा लोकजीवन को स्पंदित करती है. आदिवासी अंचलों में भगोरिया हाट सामाजिक मेल-मिलाप और जीवन की नई शुरुआत का प्रतीक है. यहाँ होली केवल रंगों का खेल नहीं, बल्कि लोकसंस्कृति की सशक्त अभिव्यक्ति है. आज जब विश्व जल संकट, पर्यावरणीय असंतुलन और सामाजिक दूरी जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है, तब जल और रंग के ये उत्सव हमें प्रकृति के महत्व और सामाजिक एकता का संदेश देते हैं. जल जीवन का आधार है और रंग जीवन का उत्साह. होली से लेकर सोंगक्रान और ला टोमाटीना तक, और भारत से लेकर विश्व के महानगरों तकजल और रंग का यह उत्सव मानवता की साझा भावना को प्रकट करता है. यह बताता है कि संस्कृति सीमाओं से परे होती है. जहाँ-जहाँ भारतीय बसे हैं, वहाँ-वहाँ होली ने अपने रंग बिखेरे हैं. आज होली केवल भारत का त्योहार नहीं, बल्कि विश्व का उत्सव बन चुकी है, होली एक ऐसा पर्व जो हमें हर वर्ष यह स्मरण कराता है कि विविधता में ही सच्ची एकता का रंग छिपा है. होली के संदर्भ में प्रसिद्ध कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र की यह कविता आज भी प्रासंगिक है-

गले मुझ को लगा लो ऐ मिरे दिलदार होली में,
बुझे दिल की लगी भी तो ऐ मेरे यार होली में

(लेखक भोज विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति हैं)

सत्ता और लोकप्रियता अर्जित करना संघ का उद्देश्य नहीं

कृष्णमोहन झा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने विगत दिनों देहरादून के निम्बूवाला स्थित हिमालयन सांस्कृतिक केंद्र गढ़ी कैंट में आयोजित प्रमुख जन गोष्ठी एवं विविध क्षेत्र समन्वित संवाद कार्यक्रम में पूर्व सेनाधिकारियों एवं पूर्व सैनिकों के साथ संवाद किया. इस कार्यक्रम में सेना का नेतृत्व कर चुके सेवा निवृत्त 6 जनरल , वाइस एडमिरल, डीजी कास्ट गार्ड , ब्रिगेडियर एवं 50 से अधिक कर्नल रैंक के सेवानिवृत्त सेनाधिकारियों सहित हवलदार एवं कप्तान को रैंक के सैकड़ों पूर्व सैनिकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई . कार्यक्रम के प्रथम सत्र में संघ प्रमुख ने अपना सारगर्भित उद्बोधन दिया एवं द्वितीय सत्र में उन्होंने सामाजिक एवं राष्ट्रीय महत्व के समसामयिक विषयों पर केंद्रित प्रश्नों के उत्तर दिए.

संघ प्रमुख ने पूर्व सेनाधिकारियों एवं पूर्व सैनिकों का आह्वान किया कि वे संघ शाखाओं में आकर उसके कार्यों को देखें और अच्छा लगे तो संघ से जुड़ जाएं. इसके अलावा आप अपना काम लेकर आएं और उस काम में संघ की मदद ले सकते हैं. सभी विकल्प खुले हैं.समाज में बदलाव लाने के उद्देश्य से बहुत से गैर राजनीतिक संगठन काम कर रहे हैं. आप उनमें भी जा सकते हैं. वर्तमान में संघ के ज़ो एक लाख तीस हजार से अधिक सेवा केंद्र चल रहे हैं उनमें भी आप अपना योगदान दे सकते हैं और इसके बाद भी अगर आप कोई अच्छा काम बिना फल की आस लगाए कर रहे हैं तो आप हमें जानते हों या नहीं, हम आपको संघ का स्वयंसेवक ही मानते हैं. संघ प्रमुख ने कहा कि संघ की अपनी कोई महत्वाकांक्षा नहीं है. वह देश के लिए काम कर रहा है. संघ का उद्देश्य व्यक्ति निर्माण है . समाज का संगठित सामर्थ्य प्रत्येक नागरिक को सुदृढ़ बनाता है इसलिए समाज का नेतृत्व चरित्रवान और अनुशासित होना अनिवार्य है. संघ प्रमुख ने कहा कि संघ किसी बाह्य साधन के बिना खड़ा हुआ और दो बार प्रतिबंध लगने के बाद भी समाज की आत्म शक्ति के बल पर निरंतर आगे बढ़ता रहा. संघ प्रमुख ने अग्निवीर योजना को एक प्रयोग बताते हुए कहा कि अनुभव के आधार पर इसमें सुधार और परिमार्जन की गुंजाइश पर विचार होना चाहिए.

संघ प्रमुख ने सोशल मीडिया में वैचारिक कटुता को रोकने के लिए सार्थक संवाद और शास्त्रार्थ की आवश्यकता प्रतिपादित की . संघ प्रमुख ने भ्रष्टाचार

के बारे में पूछे गए एक सवाल के जवाब में कहा कि भ्रष्टाचार केवल व्यवस्था की नहीं नियत की भी समस्या है. बच्चों में संस्कार, आमदनी में बचत और समाज के लिए वितरण की भावना विकसित करने की प्रवृत्ति को राष्ट्रनिर्माण का वास्तविक आधार है. व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर परोपकार में आनंद खोजने की प्रवृत्ति ही स्वस्थ समाज की पहचान है. समान नागरिक संहिता के संबंध में पूछे गए एक सवाल के जवाब में मोहन भागवत ने उत्तराखंड के यूजीसी माडल की प्रशंसा करते हुए कहा कि उसी तर्ज पर इसे सारे देश में लागू किया जाना चाहिए. गौरतलब है कि उत्तराखंड देश का ऐसा पहला राज्य है जहां की सरकार ने पिछले साल जनवरी में यूजीसी लागू करने का फैसला किया था. उत्तराखंड में इसे लागू करने के पूर्व एक प्रस्ताव तैयार कर उस पर सुझाव आमंत्रित किए गए.

लगभग तीन लाख लोगों से मिले सुझावों पर गहन विचार करने के बाद उस प्रस्ताव में जरूरी संशोधनों के बाद उसे लागू करने का फैसला किया गया. देहरादून के बाद संघ प्रमुख ने पंजाब के पठानकोट स्थित किरण आडीटोरियम में सेवा निवृत्त कमीशंड सैन्य अधिकारियों के साथ संवाद गोष्ठी में राष्ट्रीय और सामाजिक महत्व के मुद्दों पर अपने विचार व्यक्त किए. सभागार में वंदे मातरम् के इतिहास, गरिमा और प्रोटोकॉल तथा भारतीय सेना के तीनों अंगों के परमवीर चक्र से सम्मानित वीर सैनिकों की परिचयात्मक प्रदर्शनी विशेष आकर्षण का केंद्र रही. संघ प्रमुख ने अपने व्याख्यान में संघ की स्थापना, उद्देश्य और कार्य पद्धति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संघ के कार्य को निकट से देखकर ही उसे समझा जा सकता है. संघ किसी के प्रतिस्पर्धा अथवा प्रचार की भावना से नहीं अपितु राष्ट्हित को केंद्र में रखकर कार्य करता है. सत्ता अथवा लोकप्रियता अर्जित करना संघ का उद्देश्य नहीं है. संघ प्रमुख ने कहा कि संघ समाज से अलग कोई संगठन नहीं है बल्कि समाज का संगठित रूप है. संघ हर तरह की आलोचना का स्वागत करता है परन्तु संघ को अच्छी तरह समझने के बाद ही उसकी आलोचना की जानी चाहिए.

संघ प्रमुख ने भारतीय सेना को अनेकता में एकता का सशक्त उदाहरण बताते हुए कहा कि समाज जीवन में यही भावना सुदृढ़ होनी चाहिए. संघ प्रमुख ने सेना के समर्पण, निष्ठा और अनुशासन जैसे गुणों को समाज जीवन में भी अपनाए जाने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि अधिकारों के साथ ही कर्तव्य पालन भी राष्ट्र को सशक्त बनाता है.

(लेखक राजनैतिक विश्लेषक हैं)